Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - SEMESTER - VI
MJC-11 : Contemporary Indian Philosophy

"Ambedkar"
"Neo-Budhism"
(नव बौद्ध धर्म)

धर्म ही जीवन है और जीवन धर्म है। धर्म का रास्ता न्याय का रास्ता है, सदाचार का रस्ता है। सद्व्यवहार का रास्ता है और सर्वमंगल का रास्ता है, वह रास्ता है जो मानव से मानव को जोड़ता है और उनके जीवन में करुणोदय और प्रेमोदय की गदगदानुभूतियों का उद्रेक करता है। धर्म इसी के प्रति समर्पण का दूसरा नाम है।

धर्म डॉ. अम्बेदकर के चिन्तन-मनन का प्रमुख विषय रहा था। हिन्दू धर्म के अभिशापों को झेलते हुए भी वे धर्म की आवश्यकता के महत्व को नकार नहीं सकते थे। धर्म कौन सा अपनाया जाये अब यह उनके अनुचिन्तन का विषय था! क्योंकि हिन्दू धर्म जिन कदाचरणों तथा रूढ़ - परम्पराओं से ग्रस्त है उसको देखते हुए इस धर्म से दलित वर्ग की स्थिति में कोई भी सुधार होना असम्भव है। वे नहीं चाहते थे कि उनका वर्ग हिन्दू धर्म का गुलाम बना रहे। इसमें रहते हुए इसका कभी भी कल्याण नहीं हो सकता। भौतिक उपलब्धियों की अपेक्षा सम्मान की सुरक्षा उनकी नजर में महत्वपूर्ण थी।

यह निर्णय सन् 1935 में उन्होंने किया था कि वे हिन्दू धर्म को छोड़ देंगे। उन्होंने कहा था — "यद्यपि मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूँ क्योंकि इसमें कुछ कर नहीं सकता था लेकिन मैं हिन्दू के रूप में

जुही शांकिता"। वर्णवाद व ब्राह्मणवाद
से स्वतंत्र प्राप्त करना उनके जीवन का पवित्र
लक्ष्य बन गया था। इसलिए उनका दृष्टिकोण संकीर्णात्मक
था। वह मात्र आर्थिक प्रगति में विश्वास
नहीं करते थे। न उनका विश्वास सम्मान रहित
ऐश्वर्य में था। दरअसल उन्हें जितना
अपमान, तिरस्कार तथा उपेक्षा हिन्दुधर्म
व कांग्रेस राजनीतिज्ञों से मिली उसी का
यह फल था कि वे बेहद तीखी घुटन
महसूस करने लगे थे। आत्म-सम्मान की
आकांक्षा उनकी अन्तश्चेतना में गहरे पैठ
गयी थी। उनकी अन्तश्चेतना की सेवा
उत्तरोत्तर सवर्ण जाति के आक्रमणों से
फुफकार उठी थी। इसमें कोई शक नहीं
था कि वह निश्छल इन्सान थे। उन
का व्यक्तित्व नहीं था। उसमें स्वार्थपूर्ण
राजनीतिक छल भी नहीं था। वस्तुतः उनकी
राजनीति सत्ता की नहीं थी धर्म की थी
और समता तथा भ्रातृत्व की थी। उन्होंने
अनेक बार एक ही बात को दोहराया है:
"मनुष्य का यह जन्मसिद्ध
अधिकार है कि वह सम्मानपूर्वक जीवनयापन
करे। इस लक्ष्य को प्राप्ति के लिए अधिकाधिक
कार्य करना चाहिए। हम इस उद्देश्य को
प्राप्ति के लिए बड़े-से बड़ा बलिदान करने
के लिए कटिबद्ध हैं, हम आत्म मानव-सम्मान
के लिए संघर्ष कर रहे हैं जिसको
हिन्दुओं ने हमारे लिए अभी तक निषिद्ध
कर रखा था। हम अपने जीवन को
उतना पूर्ण तथा सुन्दर बनाना चाहते
हैं जितना सम्भव हो सके।"

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में समझा था और वह वर्णवाद (जातिगत सामाजिक व्यवस्था) को जड़मूल से उखाड़कर समतावादी समाज की नींव रखना चाहते थे। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही उन्होंने अपने लोगों को बौद्ध धर्म अपनाने की सलाह दी और 14 अक्टूबर 1956 को वयोवृद्ध महास्थविर चन्द्रमणि ने डा. अम्बेडकर सहित उनके पाँच लाख व्यक्तियों को दीक्षा दिलाई। वे सब बौद्ध हो गए।

"नव बौद्ध धर्म" (नवयान) की स्थापना 14 अक्टूबर 1956 को डॉ. भीमराव अंबेडकर ने नागपुर में की थी जब इन्होंने अपने अनुयायियों (मुख्यतः दलितों) के साथ हिंदू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म अपनाया। यह सामाजिक समानता, मानवतावाद और तर्कसंगतता पर आधारित है, जो पारंपरिक बौद्ध पंथों (महायान/थेरवाद) से भिन्न है। यह आंदोलन जाति-आधारित भेदभाव से मुक्ति और आत्मसम्मान के लिए एक सुधारवादी प्रयास है।

नव बौद्ध धर्म की स्थापना के अनेक प्रमुख कारण हैं

(1) डॉ. बी. आर अंबेडकर ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व स्थापित करने के लिए नवयान का मार्ग प्रशस्त किया। इसे अंबेडकर बौद्ध धर्म भी कहा जाता है।

नैतिक जीवन (2). यह सर्वकार्यों को आगाह सामाजिक व्यक्तिता और तर्कसंगतता पर ओर देता है। यह बड़ कारणों को सामाजिक असमानता से जोड़ता है।

(3) 22 प्रतिज्ञाएँ दीक्षा के समय अंबेडकर ने 22 प्रतिज्ञाएँ दी जो फराने हिंदू देवी-देवताओं और प्रथाओं का त्याग करने और समानता अपनाने का संकल्प थी।

(4) मुख्य ग्रंथ :- इस धर्म का मुख्य ग्रंथ अंबेडकर द्वारा लिखित "भगवान बुद्ध और उनका धम्म" है।

(5) सामाजिक प्रभाव - 1956 में लगभग 3,80,000 और बाद में लाखों लोगों ने इसके तहत धर्मांतरण किया। भारत के बौद्धों में लगभग 87% इसी समुदाय (नव बौद्धों) से है।

(6) धम्म चक्र - प्रवर्तन दिवस - हर साल 14 अक्टूबर को नागपुर (दीक्षाभूमि) में इसे प्रमुखता से मनाया जाता है।

यह आन्दोलन मुख्य रूप से महाराष्ट्र और अन्य हिस्सों में दलित समुदाय के सशक्तिकरण का धार्मिक और सामाजिक-राजनीतिक माध्यम रहा है।

सामाजिक सुधारकों में अम्बेडकर का नाम निश्चित रूप से बहुत ऊपर है।